जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – सितम्बर 2023 ।। अंक – 38 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

सिलाई केन्द्र से रिंकु को मिला रोजगार का नया अवसर (पृष्ठ – 02)

ग्राहक सेवा केंद्र से ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध हुई बैंकिंग सेवाएं (पृष्ठ – 03)

मडुआ की खेती को उन्मुख हो रहीं हैं जीविका दीदियाँ (पृष्ठ – 04)

समुदाय द्वारा संचालित जीविका प्रशिक्षण और शिक्षण केंद्र

जीविका परियोजना अंतर्गत प्रत्येक जिले में स्वयं सहायता समूहों का गठन एवं इन स्वयं सहायता समूहों को संगठित कर ग्राम संगठन तथा ग्राम संगठनों को संगठित कर संकुल स्तरीय संघ का निर्माण किया गया है। इन समुदाय आधारित संगठनों के सुचारु संचालन के लिए बड़े पैमाने पर सामुदायिक पेशेवर कार्य कर रहे है जो इन सामुदायिक संस्थानों के गठन और संचालन में सहायता प्रदान करते हैं। सामुदायिक संगठनों द्वारा इनके संचालन हेतु सामुदायिक पेशेवरों का चयन किया गया है । परियोजना क्षेत्र के बड़े पैमाने पर विस्तार के साथ, सामुदायिक साधन सेवियों और अन्य सामुदायिक पेशेवरों की संख्या भी बढ़ी है। इन सामुदायिक पेशेवरों को लगातार प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण के माध्यम से उनका क्षमतावर्द्धन किया जाता है। सामुदायिक साधन सेवियों और अन्य सामुदायिक पेशेवरों जैसे कम्युनिटी मोबिलाइजर, बुककीपर, सामुदायिक संसाधन सेवियों आदि को व्यवस्थित रूप से प्रशिक्षित करने के लिए जिला स्तर पर प्रशिक्षण और शिक्षण केंद्र की परिकल्पना की गयी है।

प्रशिक्षण एवं शिक्षण केंद्र जिला स्तर पर गठित एक ऐसी संस्था है जिसमें जिले के अन्तर्गत गठित सभी संकुल स्तरीय संघों का प्रतिनिधित्व होता है। यह संस्था पूर्णत: समुदाय द्वारा संचालित व प्रबंधित है। यह समुदाय आधारित संस्थाओं के प्रतिनिधियों, सामुदायिक संसाधन सेवियों एवं सामुदायिक कार्यकर्ताओं के क्षमतावर्धन एवं विकास हेतु प्रशिक्षण देने और विभिन्न माध्यमों से समुदाय के अनुभवों के आदान–प्रदान के लिए एक उत्कृष्ट केन्द्र है। प्रशिक्षण की प्रक्रिया के माध्यम से विभिन्न विषयों पर कुशल सामुदायिक पेशेवरों को विकसित किया जाता है। इसके साथ ही सामुदायिक पेशेवरों द्वारा सामुदायिक विकास कार्यक्रमों को उन इलाकों तक पहुंचाने में सहायता ली जाती है, जहां उनकी जरूरत होती है।

प्रशिक्षण एवं शिक्षण केन्द्र का उद्देश्य

जिला स्तर पर समुदाय द्वारा संचालित प्रशिक्षण एवं शिक्षण केंद्र के उद्देश्य निम्न हैं –

- अनुभवी सामुदायिक सदस्यों की पहचान करना जिन्होंने परियोजना कार्यों को क्रियान्वित करने में पहल की हो और ऐसे सदस्यों को समुदाय आधारित संस्थाओं के कार्यकर्ता के रूप में विकसित करना।
- उन्मुखीकरण, प्रशिक्षण एवं क्षेत्र भ्रमण द्वारा समुदाय आधारित संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं एवं सामुदायिक साधन सेवियों को क्षमतावर्धन।
- परियोजना कार्यक्षेत्र के अंतर्गत तथा कार्यक्षेत्र के बाहर समुदाय के उन्मुखीकरण, सामुदाय आधारित संस्थाओं के गठन, प्रशिक्षण एवं परियोजना गतिविधियों को क्रियान्वित करने में समुदाय आधारित संस्थाओं के सामुदायिक पेशेवर तथा सामुदायिक संसाधन सेवी की सेवाएँ प्रदान करना।
- प्रशिक्षण हेतु समुदाय द्वारा प्रबंधित बुनियादी ढांचा विकसित करना जो समुदाय आधारित संस्थाओं के सामुदायिक पेशेवरों, प्रतिनिधियों के साथ हीं सामुदायिक संसाधन सेवियों एवं परियोजनाकर्मियों और सरकारी/गैर सरकारी विभागों/संस्थाओं हेतु विभिन्न प्रशिक्षण विषयक जरुरतों को पूरा कर सके और विभिन्न सेवाएँ प्रदान कर अपने सदस्यों को बेहतर आय अर्जन हेतु सक्षम कर सके।

जिला स्तर पर गठित प्रत्येक संकुल संघ के निदेशक मंडल के सभी सदस्य प्रशिक्षण एवं शिक्षण केंद्र के सदस्य होते हैं। संकुल संघ द्वारा निर्मित निदेशक मंडल के सभी सदस्य प्रशिक्षण एवं शिक्षण केंद्र के आम निकाय के सदस्य होते हैं। प्रशिक्षण एवं शिक्षण केंद्र का एक प्रतिनिधि निकाय होता है और सभी संकुल संघों के अन्तर्गत गठित निदेशक मंडल के पदधारी सदस्य के अलावा संकुल संघ द्वारा नामित दो सदस्य ही उसके सदस्य होंगे। प्रशिक्षण एवं शिक्षण केंद्र के कार्यों की देख–रेख करने के लिए 12 सदस्यों का निदेशक मंडल होता है, जिसका निर्वाचन प्रतिनिधि निकाय की देखरेख में कराया जाता है।

प्याज पाउडर का उत्पादन कर समता बनी महिला उद्यमी

शेखपुरा जिला के अरियरी प्रखंड अंतर्गत चांदी गांव की रहने वाली समता सिन्हा सुखसागर जीविका महिला प्याज प्रसंस्करण उत्पादक समूह में सदस्य के तौर पर भूमिका निभाते हुए अब एक महिला उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बना चुकी हैं। वर्ष 2018 के दिसंबर माह में तत्कालीन जिला पदाधिकारी की विशेष पहल पर जिला खनन कार्यालय की राशि से अवैध खनन अर्थात पहाड़ काटने से जुड़े परिवार की महिलाओं को जीविकोपार्जन करने के सही साधन की व्यवस्था कराने की दिशा में कार्य करते हुए इस उत्पादक समूह का गठन किया गया। कृषि विज्ञान केंद्र से तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त कर 51 महिलाओं ने जिले में अधिकाधिक हो रहे प्याज को प्रसंस्कृत कर उसके उत्पाद हेतु सुखसागर नाम से उत्पादक समूह का गठन किया।

उत्पादक समूह में समता दीदी शुरुआती समय से ही काफी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। इस उत्पादक समुह द्वारा वर्तमान में दर्जनों महिलाओं के साथ प्याज के पाउडर का निर्माण कर उसका विपणन किया जा रहा है। ये महिलाएँ बिहार के सबसे बहुचर्चित सरस मेला में प्याज के पाउडर के साथ–साथ अदरक, लहसुन एवं हरी मिर्च के सुखे पाउडर का निर्माण करके 'सुखसागर मसाला' ब्रांड के नाम से प्रदर्शनी सह बिक्री करती हैं।

पटना सहित देश के अनेक शहरों यथा दिल्ली, भुवनेश्वर, रांची, धनबाद जैसे बड़े–बड़े शहरों में आयोजित होने वाले विभिन्न मेलों में वह बढ़–चढ़कर भाग लेती हैं। इन मेलों से होने वाली आय उत्पादक समूह की दीदियों के बीच वितरित किया जाता है। समता दीदी के साथ–साथ दर्जनों महिलाओं को प्रतिमाह औसतन 3 से 4 हजार रुपए की अतिरिक्त आमदनी हो जाती है। समता दीदी प्याज के पाउडर के महत्व और इसके निर्माण के पीछे के उद्देश्यों से भी लोगों को अवगत कराती हैं। वर्त्तमान में इस प्याज पाउडर के उपयोग करने वाले लोग इसे बहुत उपयोग में ला रहे है और सही तरीके से इसका लाभ भी उठा रहे हैं।

सिलाई केन्द्र से रिंकु को मिला रोजगार का नया अवसर

रिंकु दीदी मुंगेर जिला के जमालपुर प्रखंड के अंतर्गत हसनगंज की रहने वाली हैं। रिंकु दीदी को 4 बेटी है। दीदी के पति नारायण शर्मा बढई का काम करते हैं। एक समय घर में आमदनी का स्रोत सिर्फ पति की मजदूरी ही थी। पति की कम आय से घर की जरूरतें पूरी नहीं हो पाती थीं। घर की आर्थिक स्थिति सही नही होने के कारण उनके बच्चों की पढ़ाई–लिखाई सही तरीके से नहीं हो पा रही थी।

रिंकु दीदी निशा जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनीं। समूह के मॉडूलर प्रशिक्षण के बाद रिंकू दीदी में आत्मविश्वास जगा। उन्हे लगा कि हम महिलाएं भी कुछ कर सकती हैं। दीदी पहले से सिलाई–कटाई का काम जानती थीं इसलिए दीदी ने समूह से ऋण लेकर एक सिलाई मशीन खरीदी और घर पर ही कपड़े सिलाई करने का काम करने लगी।

इसी बीच जमालपुर प्रखंड के साफियाबाद में जीविका द्वारा संचालित अधिकार जीविका सिलाई प्रशिक्षण सह उत्पादन केन्द्र की शुरूआत की गई। रिंकु दीदी भी इस सिलाई केन्द्र से जुड गईं। रिंकु दीदी को नए एवं आधुनिक मशीनों पर कार्य करने का प्रशिक्षण सिलाई केन्द्र के प्रशिक्षक के द्वारा दिया गया। रिंकु दीदी प्रशिक्षण के बाद अपने घर मे सिलाई कटाई के काम के साथ सिलाई केन्द्र मे भी काम करने लगी।

रिंकु दीदी को इस सिलाई केन्द्र से कोरोना काल में मास्क निर्माण का कार्य मिला। उन्होनें 'हर घर झंडा' अभियान के तहत सिलाई केन्द्र में झंडा निर्माण का भी कार्य की। आज के समय में रिंकु दीदी को अपने घर और सिलाई केन्द्र दोनों मिलाकर हर महीने 4 से 5 हजार रूपये की आमदनी हो जाती है। रिंकु दीदी कहती हैं कि–'जिले में स्थापित सलाई केन्द्र आने वाले दिनों में दर्जनों दीदियों के जीवन में परिवर्त्तन लाने में सफल होगा और दीदियों की आर्थिक कठिनाईयों का समाधान बनेगा।

ग्राहक सेवा केंद्र से ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध हुई बैंकिंग सेवाएं

'सशक्त महिला, सशक्त परिवार, आगे बढ़ रहा अपना बिहार।' ग्रामीण क्षेत्रों में जीविका समूह से जुड़ी महिलाएं अब उद्यमी बनकर स्वावलंबन की मिसाल पेश कर रही हैं। पूर्व में संपूर्ण वित्तीय समावेशन के तहत ग्रामीण क्षेत्रों के आमजनों को बैंकिंग सेवा उपलब्ध करना किसी चुनौती से कम नहीं था। राज्य के कई ग्रामीण क्षेत्रों के सुदूर इलाकों में बैंकिंग सेवाएं किसी सपने से कम नहीं था। बैंकों की कमी के कारण लोगों को बैंकों की सेवाएं लेने में काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। इन्हीं समस्यायों से निजात के लिए विभिन्न बैंको के द्वारा जीविका के साथ मिलकर ग्राहक सेवा केन्द्र (सी.एस.पी.) खोलने की कवायद शुरू की गई। जिसमें जीविका समूह से जुड़ी महिलाओं को प्रशिक्षण उपरांत ग्राहक सेवा केन्द्र खुलवाया गया और साथ में संचालन के लिए राशि उपलब्ध करवायी गयी। इस क्षेत्र में कार्य करते हुए जमुई के सभी दस प्रखंडों में विभिन्न बैंकों के सहयोग से जीविका समूह से जुड़े 96 ग्राहक सेवा केन्द्र का संचालन सफलता पूर्वक किया जा रहा है। इन ग्राहक सेवा केन्द्रों के संचालन से जुड़ी दीदियों को बैंक सखी कहते हैं। आज ये 96 बैंक सखी दीदियां ग्राहक सेवा केंद्र का संचालन कर आत्मनिर्भर हो रही हैं। ग्राहक सेवा केंद्रों के माध्यम से प्रतिदिन लाखों रूपये का लेन–देन किया जा रहा है। ग्राहक सेवा केंद्र से मिलने वाला कमीशन ही बैंक सखी की आमदनी का जरिया है। ग्राहक सेवा केंद्र का संचालन करते हुए आज बैंक सखी दीदियों की मासिक आय 5 से 15 हजार तक पहुँच चुकी है।

ग्राहक सेवा केंद्रों के संचालन से आज जहां ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकों की सेवाओं तक लोगों की पहुँच आसान हुई है, वहीं जीविका दीदियाँ भी आर्थिक रूप से सशक्त हुई हैं। ग्राहक सेवा केंद्र की स्थापना से पहले चयनित बैंक सखी को वित्तीय समावेशन से संबंधित व्यवसायिक मॉडल पर प्रशिक्षण के साथ–साथ केंद्र संचालन में मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान किया जाता है। जमुई जिले में 96 ग्राहक सेवा केंद्रों के माध्यम से अभी तक कुल 1 अरब, 86 करोड़ 32 लाख 44 हजार 5 सौ रूपये का लेन–देन किया गया है तथा बैंक सखी दीदियों के द्वारा कुल 49 लाख 77 हजार 552 रूपये का कमीशन अर्जित किया गया है।

रिंकु को कृषि उद्यमिता से मिली नई पहचान

कटिहार जिला के संदलपुर पंचायत की रिंकु देवी अब किसी परिचय की मोहताज नहीं है। कृषि उद्यमिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए उन्हें राज्य स्तर पर आयोजित कार्यशाला में भी पुरस्कृत किया गया। गौरी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी रिंकु देवी ग्रामीण कृषि उद्यमिता से जुड़कर अपने पारिवारिक जीविकोपार्जन के कारोबार को प्रभावी बनाया और समाज में सम्मान भी हासिल की है।

जीविका द्वारा सामुदायिक संगठनों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को विभिन्न माध्यमों से जोड़कर आर्थिक रूप से सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जा रहा है। जीविका द्वारा 'महिला कृषि उद्यमी योजना' के अंतर्गत जिले में कई महिला उद्यमियों को जोड़ा जा चुका है। रिंकु देवी को ममता जीविका महिला ग्राम संगठन के द्वारा कृषि उद्यमी के रूप में चयनित किया गया। चयन उपरांत रिंकु देवी को 'सिजेंटा फाउन्डेशन' एवं जीविका द्वारा प्रशिक्षण कराया गया।

रिंकु देवी ने मार्च 2023 से उद्यमशीलता के क्षेत्र में कदम रखा। प्रारंभ में इनके द्वारा डिजिटल लेन–देन शुरू किया गया, फिर समूह से 1 लाख रूपये ऋण लेकर कृषि इनपुट सामग्री का क्रय–विक्रय शुरू किया। रिंकु ने इस कारोबार में पिछले छह माह में ढ़ाई लाख से अधिक का टर्नओवर किया। उन्होंने अपने इस कारोबार से 280 किसानों को जोड़ा है। इस दुकान के माध्यम से किसानों को अच्छे एवं गुणवत्तापूर्ण खाद एवं बीज उचित मूल्य पर उपलब्ध करवाती हैं। जीविका के जुड़ाव के पश्चात रिंकु के पारिवारिक स्थिति में भी बदलाव आया है। अब वह अपने बच्चों का पढ़ाई भी अच्छे से करवा रही हैं। रिंकू देवी की उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो गया और आज उनकी मासिक आमदनी लगभग 15000 रुपए है। उद्यमशीलता से उनके जीवन में काफी बदलाव आया है और रिंकु अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन व्यतीत कर रही हैं।

मडुआ की खेती को उन्मुख हो रहीं हैं जीविका दीदियाँ

बिहार के विभिन्न जिलों में जीविका के द्वारा मडुआ की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके लिए जीविका समूह से जुड़े परिवारों को मडुआ की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। कई प्रखंडों में जीविका समूह से जुड़े किसान परिवारों को मडुआ का बीज उपलब्ध कराते हुए उन्हें मडुआ की खेती करने के तौर–तरीकों के बारे में भी बताया गया है। इसमें मुख्य रूप से मडुआ के बीज का उपचार करने, इसकी बुआई करने, बिचड़ा तैयार करने के साथ–साथ इसकी रोपाई करने की विधि सहित इसकी सम्पूर्ण खेती के बारे में जानकारी दी जा रही है।

स्वास्थ्यवर्द्धक है मडुआ – मडुआ मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध है। इसे रागी भी कहा जाता है। मोटे अनाज को स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभदायक माना जाता है। यह बेहद सुपाच्य और स्वास्थ्यवर्द्धक होता है। इसका सेवन सर्दियों के मौसम में करना बेहतर माना जाता है। मडुआ में कैल्शियम, प्रोटीन और अमीनो एसिड भरपूर मात्रा में होता है। सर्दी–जुकाम या उल्टी से संबंधित परेशानी में मंडुआ का प्रयोग फायदेमंद होता है। यह चावल के एक अच्छे विकल्प के तौर पर भी है। इसे सहजता से दलिया में मिलाकर पकाया जा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर मांग – स्वास्थ्य के लिए बेहद उपयोगी होने की वजह से मडुआ को खाद्यान्न के रूप में शामिल किया गया है। बढ़ते खाद्यान्न संकट को देखते हुए मडुआ की मांग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी खूब हो रही है। ऐसे में भारत में उत्पादित होने वाले मडुआ को बेचकर किसान अच्छी आमदनी अर्जित कर सकते हैं।

मडुआ की खेती के लिए उपयुक्त वातवरण – दरअसल मडुआ की खेती हेतु पानी की कम मात्रा की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि पानी की किल्लत वाले क्षेत्रों में इसकी खेती किसानों के लिए उपयोगी साबित हो सकती है। भागलपुर में गंगा नदी के दक्षिण वाले क्षेत्र में स्थित कई प्रखंडों को आमतौर पर पानी के संकट का सामना करना पड़ता है। यहां पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी मानसून में कम बारिश हुई है। ऐसे में किसानों द्वारा धान की रोपाई करना मुश्किल हो रहा है। ऐसी स्थिति में बिहार की विभिन्न जिले में मडुआ की खेती के लिए उपयुक्त वातावरण उपलब्ध है। यही कारण है कि किसानों को मडुआ की खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

एक हजार से ज्यादा दीदियाँ कर रहीं हैं मडुआ की खेती – भागलपुर जिला के 10 प्रखंडों– पीरपैंती, कहलगांव, जगदीशपुर, नाथनगर, सबौर, सन्हौला, शाहकुंड, गोराडीह, सुल्तानगंज और नारायणपुर में जीविका समूह से जुड़े तकरीबन 1000 से ज्यादा किसान परिवार इस वर्ष मडुआ की खेती के लिए उन्मुख हुए हैं। इन किसानों को मडुआ की खेती करने हेतु बीज उपलब्ध कराया गया है। ये दीदियां अपने खेतों में मडुआ का बीजारोपण कर रही हैं। साथ हीं स्वास्थ्यवर्धक अनाजों के उत्पादन में अपनी भूमिका निभा रही है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार